अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का संबोधन

विश्व वेद परिषद और परमार्थ निकेतन आश्रम के द्वारा/तत्वावधान में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन में आज आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

वेद सिर्फ ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि हमारी संस्कृति है, हमारी जीवनशैली है। हमारा जीवन कैसा होना चाहिए, किन आदर्शों और मूल्यों के साथ जीवन होना चाहिए, हमारे वेद इसका संदेश देते हैं।

वेद और विज्ञान पर जब हम मंथन कर रहे हैं, तो हमें यह समझना होगा कि ज्ञान – विज्ञान हर युग में रहा है। मनुष्य जब से तार्किक हुआ है, जब से विचार-मंथन करने लगा है, तब से विज्ञान का महत्व रहा है। चिंतन-मनन और प्रयोग ही विज्ञान है।

आज यह पूरी दुनिया मानती है कि ऋग्वैदिक और वैदिक सभ्यता दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में रही हैं। हमारे प्राचीन वेदों में जो तर्क दिए गए हैं, जो सूत्र और श्लोक दिए गए हैं, उनमें और आज के विज्ञान में बहुत सी समानताएं हैं।

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। संसार के इन महान ग्रंथों के पीछे जो चिंतन है, वह बड़ा समृद्ध चिंतन है। वह इहलौकिक भी है और पारलौकिक भी है। जिस समय वेद अवतरित हुए, उस समय भले ही तकनीक आज जितनी विकसित ना हो, लेकिन अध्यात्म, चिंतन और मनन अत्यंत विकसित था।

आधुनिक दुनिया में 300 साल पहले औद्योगिक क्रांति हुई। कल-कारखानों से जब विषैला धुआँ निकला, फैक्ट्रियों से विषैले रसायन निकले; जब ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने लगी, पर्वतों की बर्फ पिघली और समुद्रों का जल स्तर बढ़ने लगा। तब जाकर दुनिया को समझ आया कि अगर मनुष्य को जीवित रहना है, तो पर्यावरण को बचाकर रखना होगा। दुनिया अब जाकर पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझ पाई है।

आज हमारे सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वो पर्यावरण और जलवायु को बचाए रखने की चुनौती है। हम जानते हैं कि यदि पर्यावरण को नहीं बचाया गया, तो मानवता को भी नहीं बचाया जा सकता है। इसलिए आज हम अपने स्वार्थ के कारण पर्यावरण का संरक्षण करते हैं। लेकिन पर्यावरण का संरक्षण हमारा कर्तव्य है, हमारा संस्कार है, यह ज्ञान हमें प्राचीन वेदों से मिलता है।

अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त कहता है कि 'माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या'। अर्थात धरती हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। पृथ्वी माता की तरह सभी मनुष्यों का भरण-पोषण करती है और हम सबका कर्तव्य है कि हम पुत्र की तरह जिम्मेदारी निभाते हुए इसका संरक्षण करें।

मॉडर्न साइंस भी इस बात से सहमत है कि इस ग्रह पर रहने वाले सभी जीवों को भोजन इसी ग्रह से मिलता है और सभी मनुष्यों के अस्तित्व के लिए यह जरूरी है कि हम पृथ्वी और पर्यावरण की रक्षा करें, इसका संरक्षण करें।

यहाँ विज्ञान और वेद में अंतर इतना सा ही है कि विज्ञान के अनुसार यह हमारी जरूरत है। यानि अगर हम पृथ्वी और अपने पर्यावरण को नहीं बचाएंगे, तो हम भी नहीं बच सकते हैं। इसलिए विज्ञान के अनुसार यह हमारी मजबूरी है कि अपने अस्तित्व के लिए हम पृथ्वी को बचाएं।

वेद इसे हमारा कर्तव्य बताते हैं, हमारा दायित्व बताते हैं। अपने ग्रह पृथ्वी को बचाना हमारी मजबूरी नहीं, बल्कि हमारे संस्कारों का हिस्सा है।

अपनी भूमि की रक्षा करना हमारे संस्कार और कर्तव्य हैं। इस भाव के साथ हम पूर्ण समर्पण से काम करते हैं। इसी भाव के साथ भारत काम कर रहा है।

हमारे इन्हीं संस्कारों और कर्तव्य भावना का नतीजा है कि दुनिया में जब औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई, दुनिया में जब पर्यावरण संरक्षण पर पहली बार विचार किया गया, उससे भी कई साल पहले (1730 ईस्वी) में हमारे देश में राजस्थान की एक महिला अमृता देवी बिश्नोई और 363 लोग पेड़ों को बचाने के लिए कट गए थे। आप उस सच्चाई के बारे में जानकार हैरत में पड़ जाएंगे। मैं अनुरोध करूंगा कि सभी उस घटना को जानें।

हमारे वेदों का एक मूल चिंतन यह है कि यह जीवन पाँच तत्वों से बना है। जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश। वेदों का हमारा चिंतन सृजन की बात करता है, निर्माण की बात करता है, शांति की बात करता है, विनाश की नहीं।

सृजन और निर्माण का यही चिंतन विज्ञान में भी काम करता है। हम परमाणु शक्ति से बिजली/ऊर्जा भी बना सकते हैं और परमाणु बम भी बना सकते हैं। हम सभी अवगत हैं कि परमाणु बम इस दुनिया का विनाश कर सकता है जबकि इसके रचनात्मक उपयोग से हम और अधिक ऊर्जा का निर्माण कर सकते हैं।

दुनिया में कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जब भारत ने आगे बढ़कर किसी दूसरे राष्ट्र पर हमला किया हो, किसी को नुकसान पहुँचाया हो, क्योंकि हमारी प्रकृति ऐसी नहीं है।

हम सत्य, शाश्वत और शांति को मानने वाले लोग हैं। वसुधैव कुटुंबकम के हमारे दर्शन ने दुनिया को सहभागिता के साथ जीवन जीने का रास्ता बताया है। और आज इसी आधार पर भारत 'एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य' के विचार के साथ जी-20 में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।

वेद और विज्ञान पर जब आज यहाँ हम सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं तो मैं समझता हूँ कि आज सबसे अधिक जरूरी यह है कि आज कि देश की वर्तमान पीढ़ी को हम अपने स्वर्णिम इतिहास के बारे में बताएं।

स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स को यह जानकारी होनी चाहिए कि भारत का प्राचीन, भारत का अतीत बहुत समृद्ध रहा है। स्कूल से हमें यह करना चाहिए।

आज भी यह पढ़ाया जाता है और बहुत से बालकों को, युवाओं को लगता है कि भारत की खोज 1498 में एक पुर्तगाली नाविक वास्को- डि-गामा ने की। पर क्या उससे पहले भारत नहीं था? भारत का इतिहास तो सभ्यताओं की शुरुआत का इतिहास है। हमारे यहाँ की नगरीय सभ्यताओं-हड़प्पा और मोहनजोदड़ों ने दुनियाभर की सभ्यताओं को रास्ता दिखाया है।

जब तक भारत के युवाओं के मन में अपने देश के प्रति गौरव का भाव नहीं होगा, तब तक हम अपने महान वेदों और अपने संस्कारों का प्रसार नहीं कर पाएंगे।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से पंच प्रण का मंत्र दिया था। उसमें एक प्रण है कि हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए।

भारत के महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने शून्य का आविष्कार किया था। महर्षि कणाद ने बताया था कि पदार्थ के सबसे छोटे से छोटे कण को और अधिक तोड़ा नहीं जा सकता है। भारत के महान गणितशास्त्री रामानुजन ने गणित के अद्भुत सूत्र दिए। बोधायन और आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने गणित में पाई और दशमलव के महान आविष्कार किए। आज भी बड़ी से बड़ी गणनाएं वैदिक गणित से सरलता से हो जाती हैं।

हजारों वर्ष पहले के हमारे नक्षत्र विज्ञान और खगोल विज्ञान का महत्व आज भी बहुत प्रासंगिक है। फसलों की बुवाई का सही समय पता लगाने के लिए, ज्योतिष, सूर्य ग्रहण-चंद्र ग्रहण सहित अनेक घटनाओं की सही सही जानकारी हमें हमारे प्राचीन ग्रंथों से मिलती है।

हमारे वेदों में अनेक प्राकृतिक घटनाओं जैसे कि सितारों और ग्रहों की गति, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी के बारे में सटीक जानकारी मिलती है।

हमारे देश में एक बहुत बड़ी आबादी या मैं कहूँ कि अधिकतर आबादी वेदों के बारे में ठीक से नहीं जानती है। इसके पीछे एक कारण यह भी है कि वेद संस्कृत में लिखे गए थे और आज की पीढ़ी संस्कृत भाषा ही नहीं जानती है।

परमार्थ निकेतन जैसे कुछ संस्थान हैं जो आज भी संस्कृत को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज दुनिया के पास भौतिक चिंतन है। उसी के बल पर वह आगे बढ़ रही है। मगर हमारे पास आध्यात्मिक चिंतन भी है। दुनिया भौतिक चिंतन के साथ रॉकेट और यान बनाकर अंतरिक्ष में जा सकती है, लेकिन अंतरिक्ष में मानव के लिए क्या संभावनाएं हैं, अंतरिक्ष के क्या खतरे हैं, मानव जाति और अंतरिक्ष के क्या संबंध है, यह विचार भौतिक ज्ञान से संभव नहीं। इसके लिए तार्किक और आध्यात्मिक विचार होना चाहिए।

हमारे पास जो सांस्कृतिक चेतना है, जो आध्यात्मिक चिंतन है, उसी के चलते भारत के नौजवान आज पूरी दुनिया में कई क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहे हैं।

मुझे बताया गया है कि अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन के अंदर वेदों में कृषि विज्ञान, जल विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, योग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान, पशु विज्ञान, मानसून विज्ञान, गणित विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, दार्शनिक तत्व, वेदों में वायु, जल, पृथ्वी, ध्वनि प्रदूषण आदि अनेक विषयों के बारे में चिंतन किया गया है।

इन विषयों पर देश भर से विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों ने अपने अपने शोध तैयार किए हैं। मैं आपके इस सामूहिक प्रयास की प्रशंसा करता हूँ। इस सभागार में उपस्थित हर एक विद्यार्थी, हर एक शिक्षक और व्यक्ति इसके लिए प्रशंसा के पात्र हैं।

वेद ब्रह्म विद्या है और इस विद्या का प्रसार करना समस्त भारत वासियों का कर्तव्य है। वैदिक शिक्षा कोई धार्मिक शिक्षा नहीं है, बल्कि यह हमें सदाचार और चरित्रवान बनाने के मंत्र है। यह परम ज्ञान और परम सत्य के अनुसंधान का मार्ग बताता है।

वेदों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार से भारतीय संस्कृति फले-फूलेगी और नई ऊंचाइयों को छुएगी। आज समाज अधूरे अध्ययन एवं सीमित ज्ञान के कारण वेदों के ज्ञान से वंचित हो रहा है, हमारी परंपरा तो रह गई हैं, लेकिन उन परंपराओं के प्राण चले गए हैं। हमें प्राण वापस लाने की जरूरत है।

हमें वर्तमान समय के अनुसार वेदों के ज्ञान को सरल भाषा में आम जन तक पहुँचाने के लिए प्रयास करने चाहिए। कालांतर में भी हमारे ऋषि-मुनियों ने ऐसे अद्भुत प्रयास किए हैं। उन्होंने वैदिक ऋचाओं की सरल व्याख्या की थी। पुराण उसी गूढ वैदिक ज्ञान का रोचक व सरल संस्करण है।

वेदों को सिर्फ सरल भाषा में लिखा ही क्यों जाए, वेद तो श्रुति हैं, जिन्हे सुनने व सुनाने की परंपरा थी। इसी पंरपरा को आगे बढ़ाते हुए वेदों का रोचक पाठ भी युवाओं तक पहुँचाया जा सकता है। हमें स्वाध्याय एवं जिज्ञासा के साथ वेद मंत्रों को समझना और समझाना होगा। ताकि इस छिपे हुए ज्ञान का लाभ आम जनता को मिल सके।

मैं इस सभागार में अनेक युवाओं को देख रहा हूँ। मुझे आप नौजवानों से बहुत आशा है। आप वेदों का गहन अध्ययन कर, हमारे इन ग्रंथों में जो ज्ञान समाहित है, उसे पूरी दुनिया को बता सकते हैं। आप आज की तकनीक भी समझते हैं और वैदिक ज्ञान की जानकारी भी रखते हैं।

आज सूचना और प्रचार-प्रसार का तंत्र बहुत मजबूत हुआ है। सोशल मीडिया, वेबसाइट, मोबाईल एप्लिकेशन, पॉडकास्ट जैसे अनेक माध्यमों के द्वारा हम वेदों का ज्ञान पूरी दुनिया तक पहुँचा सकते हैं।

इसके लिए हम अपने इन ग्रंथों का अच्छी तरह अध्ययन करें, इनके गूढ़ ज्ञान और रहस्य को समझें और फिर उसका सरलीकरण कर दुनिया के सामने रखें।

भारतीय दर्शन विशाल एवं समृद्ध है। भारत सदियों से अपनी संस्कृति, अपने दर्शन और विरासत के लिए पूरे संसार में जाना जाता है। वेद ही हमारी संस्कृति, दर्शन और परंपरा के आधार हैं।

हमारे वेदों में वह जीवन ज्ञान है, जो मानव मात्र के उच्चतम विकास का मार्ग बताता है। यदि वैदिक शिक्षा को आधार बनाया जाए आज मानव की बहुत-सी समस्याओं का समाधान निकल सकता है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारी नई शिक्षा नीति में संस्कृत शिक्षा को शैक्षिक पाठ्यक्रम की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत के साथ ही पाली एवं प्राकृत जैसी प्राचीन भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को आम जन तक सुगमता से पहुंचाने पर कार्य किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन प्रयासों से संस्कृत एवं वैदिक शिक्षा को नया आयाम मिलेगा तथा अन्य संस्थाएं एवं व्यक्ति भी इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

मैं एक बार फिर वेद और विज्ञान सम्मेलन के आयोजन के लिए 'विश्व वेद परिषद' और 'परमार्थ निकेतन आश्रम' की प्रशंसा करता हूँ। यहाँ इस दो दिवसीय सम्मेलन में देश भर से ये नौजवानों को साधुवाद देता हूँ। मुझे विश्वास है कि आपकी प्रतिबद्धता वैदिक शिक्षा को नए आयाम देगी।